Expression
अभिव्यक्ति

आदिकाल में मनुष्य सृष्टि-जगत में विचरण करता हुआ प्रकृति के नाना रूपों एवं व्यापारों से कहीं मेल खाता या कहीं टकराता हुआ जीवन में संचरण करता रहा होगा। वह इन रूपों एवं व्यापारों के प्रति कभी खुशी या कभी उदासीन होता हुआ अपने हृदय-स्थित भावों को वाच्य रूप में प्रकट करने की अभिलाषा करता रहा होगा जिनको वह संकेतों, भाव-भंगिमाओं, क्रियाओं तथा अपरिमार्जित बोली द्वारा अभिव्यक्त करता रहा होगा। वह बोली ही शनैः-शनैः मानव जाति की सभ्यता, संस्कृति तथा उसके आचार-विचार व्यवहार के इतिहास को अपने अन्तरपट में छिपाये सुव्यवस्थित, परिमार्जित एवं परिवर्द्धित होकर भाषा के स्वरूप में हमारे सम्मुख खड़ी है। आज मनुष्य-जाति की कोई भी क्रिया भाषा के बिना सम्भव नहीं है। अतः भाषा ही विचारों की काया है।

आधुनिक समय में व्यक्ति अपने मनोभावों का प्रकटीकरण भाषा के माध्यम में दो रूपों में कर सकता है—

१. मौखिक भाषा द्वारा
२. लिखित भाषा द्वारा।

मानव अपनी अनुभूतियों तथा मनोभावों की अभिव्यक्ति उच्चारित अथवा मौखिक भाषा में ही करता है।

Scanned by TapScanner

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है एकान्तवासी सार्थक नहीं। उसे सभी प्रकार के मनुष्यों से व्यवहार करना पड़ता है। अपने जीविकोपार्जन तथा उसके साधनों की उपलब्धि के लिए विभिन्न क्रिया - प्रतिक्रियाओं के लिए वाणी की सहायता लेनी पड़ती है। प्राणिजगत की यह प्रवृत्ति है कि वह अपने भावों, अन्तर्द्वन्द्वों तथा उद्वेगों को दूसरों पर प्रकट करना चाहता है तथा दूसरों की प्रकृति, आदतों एवं विचारों को जानने के लिए इच्छुक रहता है। भावों के इस आदान - प्रदान का एक ही साधन है - भाषा या वाणी।

मौखिक भाव प्रकाशन में निम्नलिखित दो उपादानों का होना अनिवार्य है —

1. अपने विचारों को दूसरों पर प्रकट करना अथवा भाव - प्रकाशन करना।

2. दूसरों के विचारों को सुनकर उसके मनोभावों को समझना या भाव ग्रहण करना।

इन दो उपादानों में ही मानव - जीवन के सम्पूर्ण क्रियाकलापों तथा भाषा के अंगों उपांगों का विवेचन हो जाता है, जैसे —

- संवाद
- अभिनय
- भाषण
- वाद - विवाद
- भाषण प्रतियोगिता इत्यादि।

Scanned by TapScanner